प्रेरणा एवं विषय-चयन -

एम्. ए. होने के पश्चात मेरे मन में एम्. फिल करने की लालसा निर्माण हो गयी । इसीलिए मैं अपने गुरूवर्य आदरणीय डॉ. अर्जुन चव्हाण (हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर) से मिली और शोधकार्य के बारे में बात की । इसके बाद मैंने रेवतीसरन शर्मा के चिराग़ की लौं, अँधेरे का बेटा, न धर्म,न ईमान नाटक पढ़े और मेरे निर्देशक डॉ. के. पी. शहा से मिली । उन्होंने भी मुझे इस विषय पर शोधकार्य करने की अनुमति दी । मैं प्रस्तुत रचनाओं से प्रभावित हुई । इसीलिए मैंने निश्चय किया कि शर्माजी के इन तीन नाटकों पर ही मैं एम्. फिल. करूँगी । अतः ''रेवतीसरन शर्मा के नाटकों का अनुशीलन'' इस विषय पर शोधकार्य करने के लिए श्रद्धेय डॉ. के. पी. शहा ने अनुमति दी और मेरा शोधकार्य आरंभ हुआ ।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित सवाल खड़े हुए थे -

1. शर्माजी के (चिराग़ की लौं, अँधेरे का बेटा, न धर्म,न ईमान) नाटकों के कथानक किस कोटि में आते हैं ?
2. इन नाटकों में पात्रों का चरित्र कैसा है ?
3. इन नाटकों में कौन-कौन सी समस्याएँ दिखाई देती हैं ?
4. रंगमंचीयता एवं अभिनेता की दृष्टि से ये नाटक कैसे हैं ?

अध्ययन सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघुशोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया हैं:

प्रथम अध्याय - ''रेवतीसरन शर्मा के नाटकों की कथावस्तु का परिचय ।''

इस अध्याय में शर्मा जी के तीनों नाटकों (चिराग़ की लौं, अँधेरे का बेटा, न धर्म,न ईमान) की कथावस्तु प्रकाशन क्रम के अनुसार दी है ।

1. 'रेवतीसरन शर्मा का 'चिराग़ की लौं' नाटक सन 1969 में प्रकाशित हुआ । इसका कथानक सामाजिक स्थिति की वह काली तस्वीर प्रस्तुत करता है, जिसके कृष्ण काला-बाजार, भ्रष्टाचार और अनैतिकता की स्याही से रंगे

हुए हैं । साथ ही यह प्रेम के उस खोखले आदर्श को प्रस्तुत करता है जो यथार्थ की निर्मम थपेड़े खाकर कच्चे शीशे के भाँति चूर-चूर हो जाता है । यह एक आदर्शप्रधान नाटक है ।

2. अँधेरे का बेटा, नाटक का प्रकाशन भी सन 1969 में हुआ है । इसका कथानक मिलिट्री आंफ़िसर मेजर नारंग के जीवन की घटना से संबंध रखता है ।

3. तीसरा नाटक न धर्म, न ईमान का प्रकाशन सन 1970 में हुआ है । इसका कथानक हमारे पारिवारिक संदर्भ से जुड़ा प्रेम और विवाह की समस्या का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता हुआ आदर्श प्रेम को रेखांकित करता है, जिस में कोई जाँति बंधन नहीं होते, उस में तो पारंपारिक दो हृदयों के मिलन की अभिलाषा रहती है । यह एक आदर्शवादी नाटक है ।

इस प्रकार प्रथम अध्याय में शर्माजी के तीनों नाटकों की कथावस्तु का परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय :- "रेवतीसरन शर्मा के नाटकों में चरित्र-चित्रण ।"

इस अध्याय में शर्माजी के तीन नाटकों (चिराग़ की लौं,अँधेरे का बेटा और न धर्म,न ईमान) के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है।

'चिराग़ की लौं' यह आदर्शवादी और नायक प्रधान नाटक है।

सशक्त चरित्र- चरित्र की दृष्टि -से किशोर, तारा, रानी, जयंत, तथा गिरीश का चरित्र महत्त्वपूर्ण है। 'अँधेरे का बेटा' में मेजर नारंग ओर उनकी पत्नी निरूपमा तो न धर्म, न ईमान में दिनेश, दादी, दया, रामदयाल, डॉक्टर आदि का चरित्र-चित्रण किया हैं ।

तृतीय अध्याय :- "रेवती सरन शर्मा के नाटकों में चित्रित समस्याएँ"

इस में 'चिराग़ की लौं' अँधेरे का बेटा और न धर्म, न ईमान' इन नाटकों में चित्रित समस्याओं का विवेचन किया हैं। जिस में सामाजिक समस्या के अंतर्गत-आर्थिक, भ्रष्टाचार, नकाबी दुनिया , नि:स्वार्थी देश-सेवकों की और, बोगस अखबार समस्याओं का विवेचन किया हैं, तो पारिवारिक समस्या के अंतर्गत-असफल प्रेम, प्रेम के खोखले आदर्श, प्रेम विवाह की, अनमेल विवाह,अविवाह, विधवा, अंध:विश्वास तथा, दांपत्य प्रेम की समस्या आदि का विवेचन किया हैं।

चतुर्थ अध्याय :- ''रेवतीसरन शर्मा के नाटकों में [redacted] एवं [redacted]।''

इस में रंगमंच के स्वरूप के साथ हिंदी रंगमंच की विकास परंपरा को स्पष्ट करते हुए-'चिराग़ की लौं', 'अँधेरे का बेटा'और 'न धर्म, न ईमान' इन नाटकों का [redacted] की दृष्टि से समग्र विवेचन किया हैं । प्रस्तुत नाटक को निर्देशक एवं व्यवस्थापक, अभिनय, रूपसज्जा, दृश्यसज्जा, प्रकाश-योजना, ध्वनियोजना, संगीत योजना, संवाद योजना, रंगमंचीय प्रस्तुति ओर दर्शकीय संवेदना आदि रंगमंचीय तत्वों के आधार पर परखा गया हैं ।

अंत में उपसंहार दिया है, जो लघु शोध - प्रबंध का सार रूप है। उपसंहार के उपरांत संदर्भग्रंथ-सूची दी है।

# ऋण-निर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को संपन्न बनाने में जिन लेखकों विद्वानों, ग्रंथालयों ने मदद की है, उन सबके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य मानती हूँ।

आदरणीय गुरूवर्य डॉ.के.पी.शहा (स्नातकोत्तर अध्यापक,हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर) तो मेरे निर्देशक हैं। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए मार्गदर्शक के रूप में आपका उपलब्ध होना मेरे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण और खुशी की बात है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध आप ही के सुयोग्य मार्गदर्शन का फल है।

आदरणीय डॉ.अर्जुन चव्हाण, प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, आपने हर वक्त मेरी सहायता की। आपके इस अनुग्रह से ऋणमुक्त होना मेरे लिए असंभव है। गुरूवर्य डॉ.चव्हाणजी की धर्मपत्नी सौ.अनीता भाभीजी के आशीर्वाद भी मेरे इस कार्य के लिए प्रेरक सिद्ध हुए। अतः उन दोनों के प्रति-आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

आदरणीय गुरूवर्य डॉ.पी.एस.पाटील, डॉ. वसंत मोरे, प्रा.गावडे (अर्थशास्त्र) श्री.प्रकाश चिकुर्डेकर तथा श्री.खिलारे इनका पल-पल मिलनेवाला मार्गदर्शन मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढ़ाता रहा।

मेरे परमपूज्य माताजी और पिताजी के आशीर्वाद से ही यह शोध कार्य संपन्न हुआ है। निरंतर उनके आशीर्वाद की छत्र-छाया में रहने की कामना करती हूँ। मेरे भाई डॉ. विजय तथा डॉ. संजय और भाभीजी डॉ.सौ. अंजली तथा सौ.संगीता, बहन प्रा.कु.सुनंदा तथा सौ. सुमन और जीजाजी इनकी प्रेरणा तथा अशीश मुझे मंजिल तक पहुँचाने के काम आये। अतः इनके ऋण से मुक्त होना संभव नहीं है। इनके प्रति भी कृतज्ञता -ज्ञापित करती हूँ।

स्नेही-साथी-कु.संध्या माने, मीना चिले, मंजुषा डाके, अनघा तोडकरी, मनिषा जाधव, किशोर पाटील, साताप्पा चव्हाण, कृष्णात पाटील, मुबारक कोथळी, इन सबके प्रति भी कृतज्ञता -ज्ञापित करती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, कै.बॅ.बालासाहेब खर्डेकर ग्रंथालयों के ग्रंथपाल तथा कर्मचारियों की मैं हृदय से आभारी हूँ। इस लघु शोध - प्रबंध का टंकन करनेवाले श्री. अनिल साळोखेजी के प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

अंत मैं उन सबके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ, जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देते रहे। भविष्य में भी इन सबसे सहयोग तथा आशीर्वाद की कामना करते हुए मैं अपना यह लघु-शोध-प्रबंध विद्वानों के संमुख परीक्षणार्थ विनम्रता से प्रस्तुत करती हूँ।

शोध-छात्रा

कोल्हापुर।

तिथि - 29-6-2000

( संगीता राजाराम नाईक )